अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
नं. 24, प्रथम तल, कम्यूनिटी शॉपिंग सेन्टर, नीति बाग, नई दिल्ली–110049

www.trif.in

Transform Rural India

बदलाव की कहानियाँ

प्रस्तावना

सुसंगत बदलाव की ओर बढ़ते कदम

हमे खुशी है कि हम बदलाव दीदियों (चेंज वेक्टर) के कार्यों को एक कहानी–पुस्तिका के रूप मे आपके सामने ला रहे हैं. ये चेंज वेक्टर (बदलाव दीदियाँ), अपने गाँवों में महिला समूह संगठन के परिवर्तन–कर्ता के रूप में पहचान बना चुकी हैं. ज्ञात हो कि ये दीदियां अपने गाँवों में सजग एवं सक्रिय महिला कैडर के रूप में उभरी है जो समुदाय में लोगों के साथ बातचीत करने, उन्हे बदलाव के लिए प्रेरित करने, अपने जीवन और गाँव समाज को सुखी और बेहतर बनाने की जिम्मेदारी लेने और सामूहिक प्रयास मे जुड़ने के लिए तैयार करती हैं.

समुदाय आधारित संगठन (महिला समूह) और पंचायती राज संस्थान के साझेदारी में स्थानीय निकायों और स्वशासन को मजबूत करने की सामूहिक परिवर्तनात्मक यात्रा का यह एक सामाजिक प्रमाण है. यह पुस्तिका टी.आर.आई (ट्रांसफॉर्म रूरल इंडिया) के बहुआयामी विकास की प्रतिबद्धता, दृष्टिकोण और विभिन्न क्षेत्रों में किये जा रहे हस्तक्षेपों के मुख्य आधार, समुदाय और सामुदायिक संस्थान निर्माण एवं इनके सशक्तिकरण को दर्शाती है.

हमारी पहल के केंद्र में मुख्य रूप से समुदाय से जुड़े हर तबके और हर व्यक्ति को सकारात्मक बदलाव की सोच से जोड़ना और उसके लिए व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों में जोड़ना शामिल रहा है। चेंज वेक्टर (सीवी), जिन्हें सामुदायिक स्तर समुदाय के सहयोग से सामूहिक विजनिंग की प्रक्रिया से चिन्हित किया गया है. इन बदलावों के लिए समर्पित और अग्रसर दीदियाँ स्वास्थ्य, शिक्षा और गवर्नेंस के क्षेत्रों में समुदाय की जरूरतों और उनकी आकांक्षाओं से सम्बंधित ग्राम स्तर पर योजनाओं को निर्धारित करने और उनके संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. ये सफलता की कहानियाँ सुदूर ग्रामीण अंचल मे दीदियों की सकारात्मक सहगामी परिवर्तनात्मक यात्रा की कुछ झलकियों को साझा करने का प्रयास है. ये ग्रामीण भारत में सबके विकास के समतामूलक अवसरों और उसके लिए सामुदायिक प्रयास में अग्रसर दीदियों की सफलता की झलक है.

यह पुस्तिका इन बदलाव दीदियों के साथ मिलकर किए गए प्रयाओं का परिणाम का साक्ष्य है जो यह दर्शाता है कि कैसे इन्होंने बिना किसी वित्तीय लाभ या प्रलोभन के बिना गाँव के संपूर्ण विकास को अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेते हुए सामाजिक परिवर्तन की जरूरत और जिमेदारी पर परिपेक्ष निर्माण के जरिए खुद को बदलाव के सक्रिय

कार्यकर्ता के रूप में न केवल तैयार किया बल्कि ,स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, और स्थानीय गवर्नेंस के विषयों पर कुछ सैद्धांतिक जानकारी और दृष्टिकोण निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से वह काम दिखाया जिससे कि सामाजिक भागीदारी और समावेशीकरण के तौर पर कई दस्तावेजों में प्रस्तुत किया गया है. यह कहानियाँ बताती हैं कि समुदाय की चर्चाओं और गतिविधियों ने सामुदायिक नेतृत्व को कैसे बढ़ाया और समुदाय की अधिक से अधिक भागीदारी को विस्तृत विकास की भागीदारी के कार्यों जैसे अधिवेशन, कैम्पेन्स, चर्चाओं को सफल कार्यक्रमों मे तब्दील कर दिया. बदलाव दीदियों ने अपने गाँवों, ग्राम पंचायत और उनके संबंधित क्लस्टर स्तर के संघीय ढांचों और प्रक्रियाओं में न केवल क्रियात्मक भूमिका निभाई है बल्कि समावेशी विकास की प्रक्रिया को एक नई परिभाषा भी दी है.

इन सफलता की कहानियों का एक महत्वपूर्ण पहलू बदलाव दीदियों, पंचायत प्रतिनिधियों, जमीनी कार्यकर्ताओं और स्थानीय प्रशासन के बीच आपसी सामंजस्य और सहयोग है. इन बदलावकारी ग्रामीण महिलाओं की सक्रिय भागीदारी विभिन्न समितियों, जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी संरचना, पात्रता, अधिकार और सेवाओं के स्तर पर, सक्रिय करने और मजबूत करने की प्रक्रियओं के संकल्प और प्रगति का साक्षी है जो विभिन्न सिविल सोसायटी संगठनों के सहयोग से बनाया गया और ष्सचेत दीदीष के रूप में समस्त क्षेत्रों मे पहचाना गया.

यह पुस्तिका हमारी समावेशी, समुदाय–केंद्रित विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता रेखांकित करते हुए ग्राम पंचायत विकास योजना (जीपीडीपी) की प्राप्ति और इसकी सामुदायिक प्रतिभागी प्रक्रिया को समझाने की दिशा में भी इशारा करती है.

हम आशा करते हैं कि जब आप इन पन्नों के भीतर सफलता और बदलाव की कहानियों का अवलोकन करेंगे तो ये आपको जमीनी स्तर पर समग्र विकास के दृष्टिकोण, सकारात्मक, सतत सामाजिक–आर्थिक और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के सुदृढीकरण और सामुदायिक–विभागीय प्रक्रियाओं की संबद्धता, जुड़ाव और सहगामी प्रगति को समझने और साक्षी बनने के लिए प्रेरित करेंगे. इस पुस्तिका के माध्यम से, हम चेंज वेक्टरों (सचेत दीदियों) के प्रयासों को सराहते हैं और उन्हें नमन करते हैं.

टीम टी.आर.आई (ट्रांसफॉर्म रूरल इंडिया)

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सुनिश्चितीकरण हेतु एक सांगठनिक प्रयास

कविता गोरे

ग्राम पंचायत- लिम्बई
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

बदलाव दीदियो की कहानियाँ काफी प्रेरणादायक है. ऐसी ही एक कहानी है कविता दीदी की जो बडवानी जिले के राजपुर ब्लॉक के समीप लिम्बई पंचायत की रहने वाली है. ग्राम पंचायत लिम्बई जिले से करीब 35 की. मी. की दुरी पर स्थित है. सचेत परियोजना की शुरुवात से ही दीदी का रुझान परियोजना के साथ जुड़ कर कार्य करने का रहा हे. दीदी के द्वारा विजनिंग प्रक्रिया के तहत 2018 में शिक्षा की सचेत दीदी के रूप में चयन किया गया और तब से लेकर अब तक दीदी गाँव में शिक्षा सम्बन्धी मुद्दों पर लगातार काम करती आ रही हैं.

इतना ही नहीं, कविता दीदी अन्य जिम्मेदारियों को भी बखूबी संभाल रही हैं. दीदी ग्राम संगठन की सचिव और जाग्रति संकुल राजपुर की सदस्य भी हैं. परियोजना के माध्यम से दीदी को समय समय पर शिक्षा से जुड़े मोड्यूल पर प्रशिक्षण दिया गया जिससे दीदी के द्वारा अपनी पंचायत, अपने गाँव में शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाये जाने पर मदद मिली. साथ ही शाला प्रबंधन समितिया को सशक्त बनाने पर भी कार्य किया.

दीदी के द्वारा शाला प्रबंधन समिति की बैठक के मुद्दों को ग्राम सभा में उठाया गया. साथ ही, समूह कि दीदियों ने बच्चों की स्कूल में नियमित उपस्थिति का परिचय किया, मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता को निगरानी किया, और

बच्चों को बेहतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए कदम उठाए हैं.

शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए, दीदी ने समय—समय पर जागरूकता रैली, वार्ड सभाओं का आयोजन, और मोहल्ला बैठकें करके लोगों को प्रेरित करने का कार्य किया. इसका परिणाम हुआ कि समुदाय जागरूक हो गया और शाला प्रबंधन समिति ने नियमित बैठकें करवाने के लिए निगरानी बढ़ाई गई. सभी मिलकर स्कूल को कैसे बेहतर बना सकते हैं, उस पर चर्चा की गई. इसके साथ ही, स्कूल में बच्चों की उपस्तिथि भी बढ़ी.

लर्निंग सेंटर के संचालन पर समझ विकसित करने के लिए दीदी सचेत परियोजना के सहयोग से बेतुल, भोपाल एवं मनावर एक्सपोजर मे गई जहाँ दीदी ने लर्निंग सेंटर क्या हे, कैसे संचालित होता है, इससे बच्चों के सिखने के स्तर पर क्या प्रभाव पड़ेगा आदि पर समझ विकसित की. साथ ही, दीदी एक्सपोजर के दौरान कुछ चीजों से काफी प्रभावित हुईं, जैसे शिक्षकों द्वारा बनाए गए टीचिंग लर्निंग मटेरियल की प्लानिंग और उसकी उपयोगिता और स्कूल मैनेजमेंट कमिटी की बैठकों में की जाने वाली चर्चाओं के तौर तरीके. दीदी ने अपने अनुभवों को ग्राम संगठन की बैठक में चर्चा करके उस पर अमल करते हुए संगठन की सहमति से कम्युनिटी लर्निंग सेंटर संचालित करने का निर्णय लिया. दीदी ने कम्युनिटी लर्निंग सेंटर को चलाने के लिए ललिता दीदी को जिम्मेदारी सौंपी और सेंटर नियमित रूप से चलने लगा.

इसके बाद कम्युनिटी लर्निंग सेंटर में बच्चों को हर दिन 1—2 घंटे गतिविधि आधारित शिक्षा दी जाने लगी जिससे बच्चों में पढ़ाई के प्रति खास रूचि बढ़ी. बच्चों और अभिभावकों के साथ मिलकर सीखने सिखाने की प्रक्रिया का प्रचार प्रसार किया गया. इस प्रकार कविता दीदी के प्रयास ने रंग दिखाना शुरू कर दिया.

स्कूल की निगरानी को लेकर बच्चों और अभिभावकों में काफी जागरूकता आ गयी. ग्राम सभा में स्कूल की समस्याओं को लेकर बातचीत होने लगी. साथ ही ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को स्कूल की वास्तविक हालातों की जानकारी दी गई. दीदी के नेतृत्व में हर माह ग्राम संगठन के सदस्यों द्वारा स्कूल विजिट की जाने लगी. और भी कई मुद्दों पर लगातार विचार होता रहा जैसे, शिक्षकों से संवाद करना, स्कूली समस्याओं की चर्चा करना, अनियमित बच्चों की सूची बनाना, उनके पालक—अभिभावक से मिलना, बच्चों को कहानी और कविता सुनाना, गतिविधि करना, मिड डे मील यानि भोजन की गुणवत्ता पर निगरानी रखना. इन सारे निर्णयों में कविता दीदी की भूमिका सराहनीय रही और उनके लगातार प्रयास से गाँव में शिक्षा का बेहत्तर माहौल बना.

सचेत परियोजना से जुड़ने के बाद दीदी के द्वारा अपने ग्राम लिम्बई में शिक्षा के प्रति बच्चों में एक अलख सी जगा दी है.

सचेत दीदी के प्रयासों से समुदाय को मिल रहा पीने को पानी और ग्राम सभा हो रही सशक्त

ज्ञानी दिनेश

ग्राम पंचायत- कादवी
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो रही है न केवल उनके द्वारा समूह संगठन में जुड़कर अपने आप को सशक्त किया जा रहा बल्कि अपने परिवार, गांव पंचायत या यू कहे की अपने देश को भी सशक्त एवम बदलाव की दिशा में अग्रसर किया जा रहा हें. महिलाओं के द्वारा पंचायतों, शिक्षा, स्वास्थ जैसे क्षेत्रों में भी कई प्रेरणादायक सफलता की कहानियां अखबारों और सोशल मीडिया पर देखने, पड़ने को मिलती हें.

यहा भी एक ऐसी कहानी है, जो ग्रामीण महिला के प्रयासों से जुड़ी हुई है.

ये कहानी है ज्ञानी दीदी की जो की ग्राम पंचायत कादवी जो बडवानी आदिवासी बाहुल्य जिले की एक छोटी सी पंचायत जो की राजपुर ब्लॉक की एक पंचायत है. कादवी पंचायत जिले से तकरीबन 60km की दुरी पर स्थित है जिसकी जनसँख्या 2200 के लगभग है. कादवी का जल स्तर काफी कमजोर होने से प्रतिवर्ष गर्मी के दिनों में लम्बी दुरी चल कर पिने का पानी लाया जाता है साथ ही खास तोर पर यह कार्य ग्रामीण

महिलाओ के द्वारा ही किया जाता हे जो अपने रोजमर्रा के खेती बाड़ी के काम करके पानी लेने जाती इस सभी समस्याओ को देख कर दीदी को काफी आहत होती. दीदी हमेशा से ही अपने गाव को समाश्याओ को लेकर चिंतित रहती इसी बिच वर्ष 2017 में दीदी सचेत परियोजना से पंचायत की सचेत दीदी के रूप में जुड़ी एवं परियोजना द्वारा प्राप्त समय समय पर पंचायती राज व्यवस्था से जुड़े मोड्यूल पर प्रशिक्षण प्राप्त किया और ग्राम सभा की ताकत को जाना. दीदी के द्वारा लगातार पानी की समस्या को ग्राम सभा में उठाया जाता किन्तु दीदी की अकेले की आवाज को कोई महत्व नहीं देता. पानी की समस्या एवं अपने ग्राम से जुड़ी अन्य समस्याओ के समाधान के लिए दीदी के द्वारा सर्वप्रथम अपने ग्राम की दीदीया जो की ग्राम संघठन से जुड़ी थी उनको एकत्रित करना शुरू किया क्योकि एक अकेले लकड़ी को कोई भी तोड़ सकता जब लकड़ी का गत्ता होता उसे तोड़ पाना मुस्किल हो जाता है. बस फिर क्या था दीदी के द्वारा समूह की महिलाओ की टोली बनाकर ग्राम सभा में ले जाये जाने लगा और फिर अपने ग्राम की समस्याओ को उठाया गया और ग्राम सभा में आवेदन पंचायत एवं अन्य विभागों में दिए गये परिणाम यह हुवा की पंचायत के द्वारा पंचायत के समीप ही एक बोर खनन करवाया गया और उसमे मोटर डाल कर पानी की व्यवस्था शुरू करवाई गई.

दीदी के प्रयासों से आज ग्रामीणजनों को पानी मिलने लग गया हे साथ ही महिलाओ का समूह भी सशक्त हो गया पहले महिलाये ग्राम सभा में जाती नहीं थी लेकिन महिलाओ ने देखा की ग्राम सभा में जाने से ग्राम की समस्याओ का समाधान होता है. इस प्रकार सचेत परियोजना के साथ जुड़ कर ज्ञानी दीदी के साथ साथ ग्राम की अन्य महिलाये भी जागरूक होकर ग्राम सभा में जाने लगी और अपने गाव के मुद्दों को उठाने लगी.

बदलाव दीदी के प्रयासों से मिला ग्रामीणों को राशन का अधिकार

रंजना वास्कले

ग्राम- रेवजा
ग्राम पंचायत- रेवजा
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

सचेत परियोजना के साथ जुड़ कर महिलाएं न केवल स्वास्थ, शिक्षा, व आजीविका से जुड़े मुद्दों पर काम कर रही हैं, बल्कि शासन द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ भी लोगों तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभा रही है. ऐसी ही एक कहानी है, ग्राम पंचायत रेवजा की रहने वाली पंचायत की सचेत दीदी रंजना वास्कले की. रंजना दीदी आदिवासी समाज से आती हैं. उन्होंने दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की ओर वर्तमान में जाग्रति समूह की अध्यक्ष हैं. साथ ही जीवन ज्योति संकुल की एक सक्रीय सदस्य भी हैं.

शुरू–शुरू में जब रंजना दीदी समूह से जुड़ी तो उनके मन में सिर्फ और सिर्फ पैसों की लेन देन और बचत की ही बात आती थी, लेकिन जब सचेत परियोजन द्वारा पंचायत से जुड़ कर सचेत दीदी बनी तो उनके व्यक्तिगत व सामजिक जीवन में बहुत से सकारात्मक परिवर्तन आए.

उन्होंने सचेत परियोजना के साथ जुड़ कर विभिन्न प्रशिक्षणों व बैठकों में भागीदारी निभाई, जिसमें दीदी को संविधान, पंचायती राज व्यवस्था, ग्राम विकास योजना, व ग्राम सभा की शक्तियों के बारे में समझने का मौका मिला. ऐसे ही एक प्रशिक्षण में दीदी को पता चला कि ग्राम सभा के पास अधिकार होता है कि वह अपने क्षेत्र के सरकारी

कर्मचारियों द्वारा दी जा रही सेवाओं के बारे में पूछ सकती है और आवश्यक सुधार के बारे में निर्देश भी दे सकती है. दीदी को उसी प्रशिक्षण में ग्राम पंचायत डेवलपमेंट प्लान (GPDP) और पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम (PDS) पोर्टल के बारे में भी पता चला.

प्रशिक्षण के बाद दीदी ने ग्राम संगठन व विभिन्न बैठकों में राशन वितरण में हो रही अनियमितता के बारे में चर्चा की. इससे सभी महिलाओं का भी ध्यान आकर्षित हुआ और उन्हें यह भी पता चला कि यह मुद्दा ग्राम सभा में उठाना जरूरी है. लेकिन समस्या ये थी कि ग्राम सभा में राशन डीलर की कमियों को दिखाने के लिए सबुत की जरुरत थी. सबूत एकत्रित करने के लिए दीदी के द्वारा सचेत परियोजना के माध्यम से पी.डी.एस. पोर्टल पर प्रशिक्षण प्राप्त युवा साथी सुनील सोलंकी का सहयोग लिया और पोर्टल से डीलर द्वारा राशन वितरण में की जा रही त्रुटियों का पता लगाया.

जब ग्राम सभा हुई तो सभी महिलाएं और युवा साथियों ने डीलर के द्वारा बार–बार की जा रही अनियमितता के मुद्दे को उठाया. फलस्वरूप ग्राम सभा में डीलर ने अपनी कमियों को दूर करने और भविष्य में ऐसी गलती न दोहराने का आस्वासन दिया. साथ ही, ग्राम सभा ने एक प्रस्ताव भी पारित किया कि भविष्य में महिला समूह द्वारा ही राशन वितरण कार्य किया जाएगा. परिणाम यह हुआ की रंजना दीदी और ग्राम के युवा साथियों के प्रयासों से आज समूह की दीदियों के द्वारा राशन दुकान का संचालन किया जा रहा है.

रंजना दीदी के द्वारा समुदाय की महिलाओ को जागरूक कर बहुआयामी परिवर्तन को लेकर कार्य किया जा रहा है. समुदाय की महिलाओं के सहयोग से मिड डे मील भोजन, स्कूल में शिक्षकों की उपस्थिति और मनरेगा जैसे कार्यों को और उनमें हो रही गड़बड़ी को भी ग्राम सभा में उठाया गया. आज पंचायत में ग्राम विकास योजना बने या कोई भी कार्य हो महिलाओं की भूमिका निर्णय से निगरानी तक होती है. दीदी के द्वारा समय–समय पर पंचायत में भ्रमण किया जाता है, साथ ही योजनाओ के बारे में जानकारी लेकर समुदाय के लोगों तक सूचनाओं को पहुंचाया जाता है. रंजना दीदी के द्वारा मजरेवार भ्रमण कर मोहल्ला बैठक आयोजित की जाती है, साथ ही जागरूकता रैली के माध्यम से ग्रामीणों के बीच योजनाओ की जानकारी पहुचाई जाती है.

रंजना दीदी का कहना है की सचेत परियोजना के कारण ही उन्हें गाँव में सामाजिक पहचान मिली और उन्हें ग्राम सभा को मजबूत और अपनी पंचायत को महिला हितैषी पंचायत बनाने का अवसर मिला.

समुदाय की दीदी के प्रयासों से हुआ कुपोषण मुक्त पंचायत

ममता सोलंकी

ग्राम- अतरसंभा
ग्राम पंचायत- अतरसंभा
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

ये बदलाव की कहानी ममता दीदी की है, जो राजपुर ब्लॉक के अतरसंभा पंचायत में रहती हैं. यह पंचायत बडवानी जिले से तकरीबन 35 कि.मी. की दुरी पर स्थित है. ममता दीदी ने अपने गाँव में बदलाव की शुरुआत सचेत परियोजना से जुड़कर तीन साल पहले की थी. सचेत परियोजना की शुरुआत वर्ष 2017 में बडवानी जिले के राजपुर ब्लॉक में हुई थी. बडवानी जिला एक आदिवासी बाहुल्य और आकांक्षी जिला है जहां गुणवत्तापूर्ण बदलाव की अपेक्षा करना कठिन है. लेकिन परियोजना की पहल को समुदाय की और से सहयोग मिला और धरातल स्तर पर सामूहिक प्रयासों के कारण कारण बदलाव की कहानियां सामने आने लगी. हम एक ऐसी ही बदलाव की कहानी को साझा कर रहे हैं.

ममता दीदी अपने गाँव में विजनिंग प्रक्रिया (गाँव और पंचायत का विजन निर्माण) के दौरान परियोजना टीम के सहयोग से स्वास्थ्य की सचेत दीदी के रूप में जुड़ी. उन्होंने परियोजना द्वारा समय–समय पर दिए गए स्वास्थ्य से जुड़े प्रशिक्षण में भी भागीदारी निभाई. प्रशिक्षण के उपरांत दीदी की स्वास्थ्य के प्रति समझ विकसित हुई. उन्होंने यह सीखा कि ग्रामीणों के स्वास्थ्य और पोषण में सुधार तब तक नहीं हो सकता जब तक गाँव और समुदाय में सचेतना और स्वास्थ्य–पोषण के प्रति संवेदनशीलता न हो.

इस दिशा में ममता दीदी ने सबसे पहला काम 'ग्राम स्वास्थ्य एवं ग्राम तदर्थ समिति' को सशक्त बनाने का किया. अतः दीदी ने नियमित रूप से आंगनवाड़ी केन्द्रों, स्वास्थ्य विभाग, नर्स दीदी, आशा दीदी से संपर्क किया एवं समिति को सशक्त करने हेतु प्रयास किया. परिणाम यह हुआ कि धीरे–धीरे समिति के

सदस्यों में अपने गाँव के लोगों के स्वास्थ्य एवं पोषण के प्रति समझ विकसित होने लगी. समिति में स्वास्थ्य एवं पोषण से जुड़े मुद्दों पर चर्चा व उसका समाधान कैसे हो सकता है उस पर विचार विमर्श किया जाने लगा.

ग्राम पंचायत की स्थायी समिति की बैठक के दौरान भी यह मुद्दे निकल कर आये कि अतरसंभा पंचायत में कुपोषण के मामले बहुत हैं. विशेष रूप से 6 बच्चे गंभीर स्थिति में हैं. तब दीदी ने तुरंत बैठक के दौरान ही उन 6 बच्चों के माता–पिता को बुलाया और उनसे चर्चा की कि आप लोग अपने बच्चों को NRC (पोषण पुनर्वास केंद्र) में भर्ती क्यों नहीं करवाते. पालकों ने बताया कि हम रोजगार में लगे रहते हैं, कृषि मजदूरी करके अपना पालन–पोषण करते हैं. तब दीदी ने समझाया कि छत्त्‌ में अगर आप अपने बच्चों को भर्ती करेंगे तो उनका नियमित चेकअप होगा, उनको उचित पोषण मिलेगा, साथ ही माता को दैनिक भत्ता भी मिलेगा.

सारी बाते समझाने के बाद पालक के द्वारा बच्चे को NRC में 14 दिन के लिए भर्ती करवाया गया और वर्तमान में सभी बच्चे बिलकुल स्वस्थ हैं. दीदी के इस प्रयास से अब पंचायत में कोई भी बच्चा कुपोषित नहीं है. कुपोषण को दूर करने के लिए दीदी के द्वारा एक और सराहनीय प्रयास किया गया है जिसमें ग्राम की समूह की दीदियों के द्वारा 'पोषण मटका' कार्यक्रम चलाया गयाय जिसमे समूह की दीदियों के द्वारा आंगनवाड़ी केंद्र में पोषण मटके में अनाज, फल, सब्जियाँ लेकर कुपोषित बच्चों या जिन बच्चों की आर्थिक स्थिति खराब है ऐसे बच्चों को ये सब्जियाँ प्रदान की जाती है.

दीदी के इस प्रकार के प्रयास से आज गाँव एवं पंचायत कुपोषण मुक्त है. इसके अलावा भी दीदी के द्वारा कई स्वास्थ्य और पोषण सुधार के स्तर में बेहतर बदलाव के लिए कार्य किए गए जिसमें ममता दीदी एवं संगठन के सदस्यों द्वारा गाँव में आंगनवाड़ी भवन निर्माण का मुद्दा एवं गाँव की नालियों की साफ–सफाई का मुद्दा ब्लॉक स्तर पर एवं क्लस्टर लेवल फेडरेशन में रखा गया जिस पर नियमित फॉलोअप लिया जा रहा है.

कोरोना की पहली एवं दूसरी लहर में लॉकडाउन के दौरान दीदियों के द्वारा राशन एकत्रित कर गाँव के वंचित, गरीब, जरुरतमंद समुदायों को वितरित किया गया था. शुरुआत में लोग टीका लगवाने से डर रहे थे जिसमें ममता दीदी और संगठन द्वारा टीकाकरण के लिए जागरूकता फैलायी गई और रैली के माध्यम से समुदाय को टीका लगवाने हेतु प्रेरित किया गया. वर्तमान में अतरसंभा में शत प्रतिशत टीकाकरण हो चूका है.

आखिर में ममता दीदी बताती हैं कि सचेत परियोजना द्वारा आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षणों से बहुत कुछ सीखने को मिला है, जिससे स्वयं के जीवन शैली में भी बदलाव आया है और इसी बदलाव को गाँव और पंचायत के प्रत्येक घर तक पहुंचाना चाहती हैं.

बेहतर स्वास्थ्य और समुचित पोषण की दिशा में एक कर्मठ हस्तक्षेप

रेखा

ग्राम पंचायत- बोबलवाड़ी
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

रेखा दीदी बोबलवाड़ी गाँव की रहने वाली हैं और यह गाँव राजपुर तहसील से 29 किलोमीटर दूर है. गाँव की कुल आबादी 3,268 है जो की 6 फलियों (टोलों/मोहल्लों) में बसा हुआ है. इस गाँव में अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़े वर्ग के लोग निवास करते हैं. लोगों की आजीविका का मुख्य साधन खेती और मजदूरी है. रेखा दीदी की शादी 18 वर्ष की उम्र में हुई थी और दीदी इस गाँव में 23 वर्ष से रह रही हैं. दीदी एक महिला किसान हैं और खेत में मजदूरी भी करती हैं.

पहले इस गाँव में महिलाओं को चारदीवारी के बीच ही रह कर कार्य करना पड़ता था और दीदी का भी यही जीवन था. वह पहले खेती–बाड़ी और घरेलू कामों में ही लगी रहती थी, लेकिन जब दीदी ने सचेत परियोजना के साथ मिलकर स्वास्थ्य की सचेत दीदी की भूमिका निभाई, तब उन्होंने अपने गाँव की स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार करने का सपना देखा. उन्होंने एक व्यापक रणनीति बनाई, जिससे गाँव में स्वास्थ्य और पोषण में सुधार होने की शुरुआत हो सके. रेखा दीदी के ने समय–समय पर स्वास्थ्य और पोषण पर प्रशिक्षण प्राप्त कर जाना कि जब तक ग्राम स्वास्थ्य एवं ग्राम तदर्थ समिति सक्रिय और मजबूत नहीं हो जाती तब तक हमारे गाँव में स्वास्थ्य की स्थिति को बेहतर नहीं किया जा सकता है.

दीदी के द्वारा नियमित रूप से नर्स दीदी, आशा दीदी, आंगनवाड़ी दीदी एवं समिति के सदस्यों से संपर्क कर बैठक के आयोजन को लेकर चर्चा एवं सम्पर्क किया गया.

शुरुआत में, कई प्रयासों के बावजूद समिति की बैठकें नियमित रूप से नहीं हो रही थीं. हालांकि, दीदी ने इस समस्या का हल करने के लिए प्रयास किया और समिति की बैठकें नियमित बनाने का प्रयास किया, और इन मुद्दों को ग्राम सभा में भी उठाने लगीं.

परिणाम यह हुआ कि ग्राम सभा द्वारा समिति की बैठक के आयोजन को लेकर समिति के सदस्यों को समझाईश दी और अब समिति की नियमित बैठक आयोजित होने लगी है और सुचारू रूप से कार्य कर रही है. स्वास्थ्य की सचेत दीदी के रूप में रेखा दीदी न केवल आंगनवाड़ी केन्द्रों और ग्राम आरोग्य केन्द्रों का समय–समय पर विजिट करती हैं बल्कि ग्राम संगठन की बैठकों में भी नियमित रूप से स्वास्थ्य और पोषण सम्बन्धी मुद्दों को समाधान हेतु उठाती रहती हैं.

रेखा दीदी के प्रयासों से ही 'ग्राम स्वास्थ्य एवं ग्राम तदर्थ समिति' का सशक्तिकरण संभव हो पाया और इसका परिणाम यह हुआ कि गाँव में स्वास्थ्य और पोषण की सेवाओं में काफी सुधार हुआ और इससे सम्बंधित संरचनाओं का भी निर्माण संभव हो पाया. ग्राम पंचायत बोबलवाड़ी में उपस्वास्थ केंद्र जर्जर हो गया था, साथ ही लोग अपना ईलाज करवाने गाँव से 10 कि.मी. दूर जाते थे. गाँव की ये समस्या दीदी से देखी नहीं गई और दीदी के द्वारा समिति की बैठक में ये मुद्दा उठाया गया.

समिति के द्वारा भवन निर्माण के मुद्दे को ग्राम सभा में रखा गया लेकिन ग्राम पंचायत सरपंच और पंचायत सचिव को इसके उलट यह लगा कि इन मुद्दों के द्वारा रेखा दीदी गाँव के लोगों के भड़का रही हैं.

उन्हें यह कहा गया कि यह आपका काम नहीं है. लेकिन गाँव के लोगों ने रेखा दीदी का साथ दिया क्योँकि इस तरह के मुद्दे गाँव के वंचित समुदाय के लिए बहुत ही मायने रखते हैं. समिति के सदस्यों के द्वारा बार–बार ग्राम सभा एवं आंगनवाड़ी विभाग में आवेदन दिए गये. दीदी और समिति के सदस्यों का प्रयास सफल रहा क्योंकि गाँव में उपस्वास्थ केंद्र का

निर्माण प्रारंभ हो गया है और इसका पूरा श्रेय रेखा दीदी को जाता है. अब गाँव के लोगों को अपना ईलाज कराने दूर शहर की और नहीं जाना पड़ता है. रेखा दीदी भी इस बात को खुशी से स्वीकार करती हैं कि सचेत परियोजना के सहयोग से हम अपने गाँव में सकारात्मक बदलाव कि दिशा में कार्य करने हेतु उत्प्रेरित हुए हैं.

कहते हैं न कि अच्छा स्वास्थ्य और बेहतर पोषण ही जीवन है और रेखा दीदी इसी को चरितार्थ करते हुए पिछले 23 वर्षों से अपने गांव के चौकठ से चौपाल की यात्रा जारी रखी हुई है और मकसद सिर्फ एक है कि उनका गांव स्वस्थ और पोषित रहे.

शिक्षा में बदलाव की कहानी बदलाव दीदी की जुबानी

सरसद बकावले

ग्राम- बाजड
पंचायत- अगलगाँव
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

शिक्षा में बदलाव कि कहानी सरसद दीदी कि जुबानी सचेत दीदी का नामरू सरसद बकावले, ग्रामरू बाजड, पंचायतरू अगलगाँव महिला सामुदायिक संगठनों के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में भी कई प्रेरणादायक सफलता की कहानियां अखबारों और सोशल मीडिया पर देखने और पढ़ने को मिलती हैं. यहाँ हम एक ऐसी ही बदलाव की कहानी को साझा कर रहे हैं जो कि वंचित और हाशिये पर खड़ी ग्रामीण महिलाओं के सामूहिक प्रयास की कहानी है.

सरसद दीदी बड़वानी आदिवासी बाहुल्य जिले के अंतर्गत राजपुर ब्लॉक के एक छोटे से गांव बाजड़ की रहने वाली है.

बाजड़ अगलगाव पंचायत का एक छोटा सा गांव है. जिसकी जनसंख्या तकरीबन 950 है. बाजड़ ग्राम बड़वानी जिले से लगभग 55 किमी व ब्लॉक मुख्यालय से 20 किमी की दूरी पर स्थित है.

सरसद दीदी की उम्र 62 वर्ष है. अतिगरीबी और पिछड़े क्षेत्र में रहने के कारण वो कभी स्कूल की सीढ़ी चढ़ नहीं पायी और इसका मलाल उन्हें जिन्दगी भर रहा. मौका मिलने पर अपने ऊपर 'अशिक्षित' होने के दाग को मिटाने के लिए उन्होंने यह प्रण लिया कि वे अपने गाँव के किसी भी बच्चे को अशिक्षित नहीं रहने देंगी. इस दिशा में महिला समूह के साथ मिलकर गाँव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को स्थापित करने की दिशा में काम करने लगीं. स्वयं–सहायता समूह में जुड़ कर ग्राम संगठन अध्यक्ष पद पर रहते हुए दीदी के द्वारा शुरू से ही शिक्षा के क्षेत्र में छोटे–छोटे प्रयास

किए जाते रहे थे लेकिन इन प्रयासों को करते हुए वह वर्ष 2017 में सचेत परियोजना से जुड़ी जिसमें गाँव के विजनिंग और प्लानिग के बाद उन्हें गाँव की शिक्षा की बदलाव दीदी के रूप में चुना गया.

प्राथमिक शिक्षा की बेहतर व्यवस्था को लेकर सरसद दीदी के द्वारा न केवल ग्राम सभा में समय समय पर प्राथमिक शिक्षा की बेहतरी का मुद्दा उठाया गया बल्कि अपने समूह संगठन की दीदियों की टोली बनाकर स्कूल में हो रही गतिविधियों की भी निगरानी की जाने लगी. सरसद दीदी के द्वारा स्कूल में शिक्षकों से नियमित संपर्क कर शाला प्रबंधन समिति की बैठक को सुचारु रूप से कराए जाने को लेकर भी चर्चाएं की जाने लगी जो की पहले कभी भी होती ही नहीं थीं.

सरसद दीदी का मानना था कि जब तक शाला प्रबंधन समिति के सदस्य अपनी–अपनी भूमिका और जिम्मेदारी नहीं समझेंगे तब तक शिक्षा में स्थाई बदलाव लाना संभव नहीं है. आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने एवम् गांव में 95% लोग कृषि पर निर्भर होने से समुदाय के द्वारा अपने बच्चों को भी कृषि कार्यों में लगा दिया जाता था जिससे न केवल पढ़ाई प्रभावित होती साथ ही बच्चों का भविष्य भी अधर में समाता दिखाई दे रहा था. शाला प्रबंधन समिति के सशक्त न होने से बच्चों के लिए न तो शुद्ध पानी और न अच्छा मध्यान्न भोजन मिल पा रहा था. दीदी के द्वारा शाला प्रबंधन समिति की नियमित बैठक करवाना शुरू किया. साथ ही ग्राम सभा में भी समिति के सशक्तिकरण को लेकर निर्णय लिया जाने लगा जिसे कि सरसद दीदी हमेशा से उठाते रहे थीं.

दीदी के द्वारा अपने ग्राम पंचायत विकास योजना में शिक्षा से जुड़े कई मुद्दे जुड़वाए गए. अंततः दीदी के प्रयासों से प्राथमिक स्कूल बाजड में चारदीवारी निर्माण कार्य, स्कूल में पीने का पानी की व्यवस्था को लेकर समुदाय को जागरूक कर व्यवस्था स्थापित की जिससे कि आज बच्चों को साफ और शुद्ध पानी पीने को उपलब्ध होने लगा है. शाला प्रबंधन समिति के सशक्त होने से अब नियमित रूप से मध्यान्न भोजन भी मिलने लगा है. दीदी के द्वारा लगातार शिक्षा विभाग में वरिष्ठ अधिकारियों से संपर्क कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु शिक्षकों की कमी को पूरा कर स्कूल में अच्छी व्यवस्था स्थापित की गई है.

लॉकडाउन के दौरान स्कूल बंद पड़े थे और शिक्षा जैसी व्यवस्था एकदम से ठप पड़ गयी थी. लेकिन बाजड की इन्हीं दीदियों के कारण सक्रिय शाला प्रबंधन समिति के द्वारा कोरोना गाइड लाइन का पालन कर निर्णय लिया गया कि बच्चों की शिक्षा को बनाए रखेंगे. उनके द्वारा मोहल्ला क्लास लगाने का निर्णय लिया गया जिसमें ग्राम के पढ़े–लिखे युवाओं से चर्चा कर सचेत परियोजना टीम के साथियों के सहयोग से मोहल्ला क्लास की शुरुआत की गई और बच्चे लॉकडाउन में भी अपनी शिक्षा और पढ़ाई से जुड़े रहे. आज ग्राम में कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित नही है, साथ ही ग्रामीण समुदाय भी अपने बच्चों को खेती–बाडी कार्यों में न भेजते हुये उन्हें उचित शिक्षा प्राप्ति की दिशा में अग्रसर है.

साझा प्रयासों से मिला प्राथमिक शिक्षा का अधिकार

जसमा कन्नोजे

ग्राम पंचायत- मटली
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

ये कहानी है बड़वानी जिले के राजपुर ब्लॉक के अन्तर्गत पलसूद क्षेत्र की एक छोटी सी पंचायत मटली की. पलसूद क्षेत्र का नाम सुनते ही कहीं न कहीं मन मे आदिवासी बस्ती, पहाड़ी क्षेत्र और अशिक्षा का चित्र हमारे सामने उभरने लगता है.

मटली ग्राम पंचायत जिले से तकरीबन 50 की. मी. दूरी पर है. यहाँ के 95 प्रतिशत लोगों का व्यवसाय कृषि कार्य एवं मजदूरी है. साथ ही 50 से 60 प्रतिशत लोगों का पलायन अन्य राज्यों मे देखने को मिलता है.

गाँव मे जागरूकता के अभाव के कारण विभिन्न योजनाओ का लाभ ग्रामीण समुदाय को नहीं मिल पाता है.

ऐसा एक उदाहरण हम देखते हैं जिसमें दुकान वाले द्वारा प्रशासन आवंटित राशन ग्रामीण हितग्राहियों को उस मात्रा में नहीं मिल रहा था, जितना कि यह मिलना चाहिए. यह जानकारी दीदियों और गाँव के युवाओं को पीडीएस पोर्टल के माध्यम से प्राप्त हुई.

जसमा दीदी ने अपने गाँव में राशन दुकान की अनियमितता की समस्या को न सिर्फ समझा पर उसे ग्राम सभा के समक्ष लाकर

उसके समाधान की ओर एक बड़ा कदम उठाया. इनके सक्रिय नेतृत्व में, ग्राम सभा एवं खाद्यान विभाग में आवेदन भी दिया गया जिससे विभाग के द्वारा उचित कार्यवाही कर राशन दुकान संचालक को समझाईश दी गई. परिणाम यह हुआ कि अब कभी भी राशन दुकान संचालक के द्वारा गड़बड़ी नहीं की जाती एवं ग्रामीणों को उनके हक का राशन मिलने लगा. जसमा दीदी ने रामा दीदी व ललिता दीदी के साथ कंधे से कंधा मिला कर राशन दुकान के लिए संघर्ष किया ओर आज गाँव के ही समूह द्वारा राशन दुकान का सुचारु रूप से संचालन किया जाने लगा है.

हालाँकि, जसमा दीदी सचेत परियोजना के साथ परियोजना के दूसरे चरण से जुड़ी, लेकिन उनकी शिक्षा के प्रति समझ और प्रतिबद्धता बिल्कुल साफ दिखाई पड़ती है. दीदी ने समय समय पर परियोजना द्वारा दिए गए शिक्षा से जुड़े मॉडुल पर प्रशिक्षण प्राप्त कर शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने पर कार्य किया. दीदी द्वारा शाला प्रबंधन समिती के सशक्तिकरण को लेकर भी शुरुवात की गई.

दीदी का मानना था कि यदि ये स्थाई समिती सशक्त हो जाए तो बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं बेहतर सुविधाये स्कूल मे मिलने लगेगी. आज ग्राम मटली मे नियमित रूप से शाला प्रबधन समिती की बेठक संचालित होती है. जोड़ाई और मटली दोनों गाँवों में कम्युनिटी लर्निंग सेंटर की ग्राम संगठन द्वारा स्थापना से ले कर संचालकों के चयन प्रक्रिया में उनकी अहम भूमिका रही है.

सिर्फ यही नहीं, मटली के फलियों में मोहल्ला कक्षा संचालित की जा रही है. उन फलियों की पहचान कर वहाँ के लिए संभावित एवं इच्छुक संचालकों की पहचान करने में भी उनका योगदान रहा है.

इसके अतिरिक्त दीदी न सिर्फ ग्राम संगठन की सक्रिय सदस्य हैं, बल्कि संगठन की उपसमिति (सामाजिक समिति) और जीवन ज्योति संकुल संगठन की भी सक्रिय सदस्य हैं. इसके तहत दीदी ने पाठशालाओं मे नियमित विजिट करना व विजिट के माध्यम से शिक्षा संबंधी मुद्दों की पहचान करना तथा संकुल संगठन में इन मुद्दों पर चर्चा का कार्य भी किया है. सिर्फ यही नहीं, उनके प्रत्यक्ष जागरूकता के कारण उन्होंने जिला स्तरीय संगठन में भी अपनी जगह बनाई है.

जसमा दीदी एक बहुमुखी प्रतिभा की कहानी है जिन्होंने अपनी प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता को गाँव से लेकर जिला स्तर तक साबित करके दिखाया है.

दीदी के प्रयासों से मिला ग्रामीण समुदाय को पानी

आनंद प्रताप

ग्राम पंचायत- इंद्रपुर
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

नारी अगर ठान ले तो हर असंभव काम को भी संभव कर सकती है और बदलाव की कहानियां लिख सकती है. ये कहानी है ग्राम पंचायत इंद्रपुर की रहने वाली आनंद दीदी की जिनके प्रयासों से ग्रामीण समुदाय को स्थाई रूप से पेयजल उपलब्ध हुआ.

ग्राम पंचायत इंद्रपुर, बडवानी जिले के राजपुर ब्लॉक की एक छोटी सी पंचायत है जिसकी लॉक से दुरी तकरीबन 16 कि.मी. है. सामाजिक–आर्थिक सूचकांकों में यह पंचायत काफी पिछड़ा हुआ है. मुख्यतरू इस पंचायत में आदिवासी समुदाय के लोग रहते हैं.

कुछ समय पहले तक, समुदाय के लोगों, खास तौर पर महिलाओं को पानी की कई समस्याओं का सामना करना पड़ता क्योंकि गाँव में पीने के पानी के लिए उन्हें 3 से 4 कि.मी. दूर दूसरों के कुएं से पानी लाना पड़ता था.

पानी की इस प्रकार की समस्या दीदी को चुभती थी. इसी बीच दीदी का जुड़ाव सचेत परियोजना के साथ हुआ और दीदी को गाँव के विकास की विजनिंग प्रक्रिया के तहत पंचायत की सचेत दीदी के रूप में चुना गया. परियोजना के माध्यम से दीदी को कई प्रशिक्षण दिए गए, जिससे कि दीदी को समस्या चुनाव, समस्या के समाधान की प्रक्रिया के बारे में जानने समझने और समस्या के समाधान का रास्ता भी मिला.

प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत दीदी ने जाना कि जब तक ग्राम संगठन और पंचायत की स्थाई समिति सशक्त नहीं हो जाती तब तक समस्याओं का स्थाई समाधान भी नहीं हो सकता है. खास तौर पर महिलाओं से जुड़ी पानी की समस्या जो की काफी गंभीर थी.

दीदी ने महिला समूह को सशक्त करने के लिए काम किया और ग्राम संगठन की बैठक में पानी से जुड़े मुद्दे उठाए. उन्होंने समूह की सभी महिलाओं को ग्राम सभा में जाने और पानी के मुद्दे पर चर्चा करने के लिए प्रेरित किया. दीदी के द्वारा ग्राम सभा में इन मुद्दों को काफी जोर–शोर से रखा गया. साथ ही, समूह की दीदियों को एकत्रित कर लोक स्वास्थ्य एवं यांत्रिकी विभाग में पानी की समस्या को लेकर ज्ञापन दिया गया.

ज्ञापन देने का परिणाम यह हुआ कि बोरवेल खनन हेतु प्रस्ताव पास हुआ और बोर खनन कार्य किया गया. किन्तु बोर सुखा निकला और समस्या ज्यों की त्यों बनी रही. इसके बावजूद, दीदी ने हार नहीं मानी और पंचायत में इस विषय पर बात की. उन्होंने दीदियों के साथ जनपद पंचायत में जाकर जनपद–सी.ई.ओं. को ज्ञापन सौंपा, जिसके परिणामस्वरूप जनपद पंचायत ने पानी के टंकी का निर्माण करवाया. इससे गाँव के सार्वजनिक कुएं में पानी इकट्ठा किया जा सकता था, लेकिन यह सिर्फ 2 घंटे तक पानी प्रदान कर पा रहा था.

मतलब पानी की समस्या का समाधान नहीं हो सका. उसके बाद समस्या के स्थायी निराकरण के लिये आनन्द दीदी और गाँव की अन्य महिलाएं अर्चना भूरालाल, कालू बाई, रुखड़ी बाई, अनीता बाई और धनु बाई पेयजल की समस्याओं को लेकर बड़ी संख्या में एकत्रित हुईं और बडवानी पी.एच.ई. विभाग के अधिकारी को ज्ञापन दिया और उनसे आग्रह किया कि जितनी जल्दी हो सके पानी की समस्या को दूर किया जाये. आनन्द दीदी और ग्राम की अन्य दीदीयों ने साहस के साथ प्रयास किया और अंजाम सामने आ गया कि इंद्रपुर में पेयजल की समस्या के निराकरण के लिय 2 करोड़ 66 लाख रूपए की

राशि स्वीकृत हो गई. वर्तमान में पानी की टंकी और गाँव में पाइप लाइन का निर्माण कार्य चल रहा है.

सचेत परियोंजना से जुड़ने के बाद दीदी ने अपने गाँव में न ही केवल पानी की गंभीर समस्या का समाधान किया अपितु निरंतर अपने गाँव में जागरूकता अभियान, शिक्षा, स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं पर भी कार्य किया है.

कहते हैं न कि मेहनत का फल मीठा होता है और वही हुआ. आनंद दीदी ने लगातार प्रयास से गाँव में पानी की समस्या का स्थायी समाधान ढूंढ ही लिया.

पंचायत प्रतिनिधि बन गाँव मे कर रही समुदाय को जागरूक,ग्रामीणों को मिला शासकीय योजनाओं का लाभ

लक्ष्मी खन्ना

ग्राम पंचायत- नंदगाँव
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

महिलाएं न केवल खेती–बाड़ी और चूल्हा–चौका कर सकतीं हैं, बल्कि जब उन्हें अवसर मिलता है, तो वह हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित कर सकती है. एक ऐसी ही कहानी है लक्ष्मी दीदी की जो ग्राम पंचायत नंदगाँव की रहने वाली हैं. ग्राम पंचायत नंदगाँव बड़वानी जिले के राजपुर ब्लॉक की एक पंचायत है, जहाँ महिलाओं का घर से बाहर निकलना और ग्राम पंचायत जैसी जगह पर अपने अधिकारों की मांग करना किसी चुनौती से कम नहीं है.

आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने के साथ साथ पुरुष प्रधानता के कारण अन्य ग्राम पंचायतों की तरह यहां पर भी पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए पदों के आरक्षण के चलते, महिलाएं पंचायत में चुनकर तो आ जाती हैं, लेकिन उनके कामकाज परिवार का कोई पुरूष, रिश्तेदार या भूतपूर्व पुरूष पंचायत प्रतिनिधि ही देखता है. कई मामले तो ऐसे भी सामने आये जिनमें पुरूष ही महिलाओं के स्थान पर महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर हस्ताक्षर तक कर देता, लेकिन अब परिस्थितियां बदल रहीं है.

सचेत परियोजना के द्वारा लक्ष्मी दीदी को विजनिंग और प्लानिंग प्रक्रिया के बाद पंचायत की सचेत दीदी के रूप में चुना गया. लक्ष्मी दीदी स्वयंसेवी सहायता समूह और ग्राम संगठन की सचिव भी हैं. परियोजना द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में नियमित रूप से भागीदारी कर उन्होंने पंचायती राज व्यवस्था की बारीकियों को बहुत अच्छे से समझा. ग्राम सभा की बैठकों में सार्वजनिक

और महिलाओं के हित के मुद्दे उठाने की ताकत भी उनको यहीं से मिली.

जब प्रदेश में ग्राम पंचायतों के चुनावों की अधिसूचना जारी हुई, तो स्वयंसेवी सहायता समूह की दीदियों ने लक्ष्मी दीदी को वार्ड पंच का चुनाव लड़ने की बात कही. पहले तो वो इसके लिये तैयार नहीं थी, लेकिन सभी महिलाओं के बार–बार कहने पर उन्होंने वार्ड पंच के लिए अपना नामंकन फार्म दाखिल किया. सभी महिलाओ की एकता और अपने वोट की ताकत के महत्व को जानकार लक्ष्मी दीदी ने चुनाव जीत लिया.

नंदगांव ग्राम पंचायत में कुल 13 वार्ड हैं, जिनमें से 9 वार्डों पर महिलाएँ चुनकर आयी हैं. इनमें से तीन वार्ड ऐसे थे, जहां पंच पद की सीट अनारक्षित थी और इन सीटों पर भी महिलाओं ने अपनी जीत दर्ज करायी. चुनाव के बाद जब ग्राम पंचायत में स्थायी समितियों का गठन किया गया तो उसमें भी महिलाओं का दबदबा रहा.

चुकी दीदी सचेत परियोजना से जुड़ी हुई थीं और उन्हें समय–समय पर परियोजना द्वारा दिए गए पंचायती राज व्यवस्था के नियम–कानून का भी ठीक से ज्ञान था, उन्होंने सर्वप्रथम पंचायत की स्थाई समिति के सशक्तिकरण का कार्य और नियमित रूप से बैठकों का आयोजन करना शुरू किया. इन समितियों की बैठक पहले कभी आयोजित नहीं होती थी या होती भी थी तो महिलाओं की भागीदारी कम ही दिखाई देती. किन्तु दीदी के लगातार प्रयास और जागरूकता के कारण अब स्थाई समितियां सशक्त होकर निर्णय लेने लगी हैं.

दीदी ने न केवल स्थाई समिति सशक्त करने का प्रयास किया बल्कि अपनी पंचायत मे बहुआयामी परिवर्तन को लेकर भी लगातार कार्य किया है. प्रशासन द्वारा संचालित विभिन्न योजनओं जैसे पेंशन, किसान सम्माननिधि, संबल आदि के लाभ दिलाने के लिए भी लगातार मोहल्ला बैठके, रैली और घर–घर सम्पर्क करती हैं. दीदी के इस कार्य में उनके पति सुरेश खन्ना भी सहायता करते हैं और दीदी के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम करते है. ये सब संभव हुआ है दीदी के संघर्ष और मेहनत से. दीदी खुद कहती है कि सचेत परियोजना से जुड़कर उन्होंने अपने गाँव में बदलाव लाने में सक्रिय भूमिका निभाई है.

बहुआयामी परिवर्तन की दिशा मे दीदी के द्वारा शिक्षा से जुड़ी समस्या पर भी कार्य किया जा रहा है. ग्राम पंचायत नंदगांव में केवल दसवीं तक ही स्कूल है. इससे आगे की पढ़ाई के लिए छात्रों को 5 कि.मी. दूर अन्य गाँव में स्थित स्कूल जाना पड़ता है. लड़के तो चले जाते हैं लेकिन, अधिकांश लड़कियां दसवीं के बाद पढ़ाई छोड़ देती हैं. इस समस्या को देखते हुए लक्ष्मी दीदी ने ग्राम सभा की बैठकों में पहले भी कई बार गाँव में 12वीं तक की स्कूल का मुद्दा रखा. ग्राम पंचायत ने दीदी के इस मुद्दे पर प्राथमिकता से साथ दिया ओर दीदी की सहायता की जा रही है.

शिक्षा विभाग के साथ भी सीधा पत्राचार किया गया लेकिन दीदी को अभी सफलता प्राप्त नहीं हुई है, फिर भी दीदी अपने लक्ष्य के प्रति अडिग होकर प्रयासरत है. लक्ष्मी दीदी का लक्ष्य है कि अब मैं गाँव में 12वीं तक स्कूल खुलवा के ही रहूंगी, इसके लिए मुझे कितना भी संघर्ष क्यों न करना पड़े. लक्ष्मी दीदी का कहना हैं कि मेरे गाँव की हर महिला हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़े.

नंदगांव की लक्ष्मी दीदी ने साबित कर दिया कि महिलाएं चूल्हा चौका करते हुए भी राजनीति कर सकती हैं और अपने समाज को ऊपर उठा सकती हैं.

साझा प्रयासों से मिला नल जल योजना का लाभ

अनीता मेहरा

ग्राम- सालखेड़ा
ग्राम पंचायत- सालखेड़ा
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

महिलाओं को अबला नारी समझा जाता है, किन्तु आज की नारी अबला नहीं सबला नारी के रूप में नजर आती है. बहुआयामी परिवर्तन को लेकर ऐसा ही जज्बा रखती है सालखेडा ग्राम की अनीता दीदी. जो महिलाएं अपने आप को अबला एवं बेबस समझती हैं, उनके लिए अनीता दीदी एक प्रेरणा है. अनीता दीदी ने बारहवीं तक पढ़ाई की, इनके दो बच्चे हैं और अपनी आजीविका के लिए घर पर ही एक कटलरी की दुकान है, जिससे वे अपना जीवन यापन करती हैं.

अनीता दीदी ग्राम संगठन की सदस्य होने के साथ–साथ सचेत परियोजना के साथ जुड़ कर पंचायत की सचेत दीदी के रूप में काम कर रही हैं. अनीता दीदी ने पंचायत की सचेत दीदी के रूप में अपने कार्यों को बखूबी निभाया है. फिर वह प्रशिक्षण में सहभागिता हो या फिर ग्राम पंचायत स्तर के मुद्दे, हर समय ग्राम की समस्याओं के समाधान के लिय डट कर खड़ी रहती है.

पिछले कुछ समय से ग्राम पंचायत सालखेडा में पानी की समस्या बनी हुई थी, लेकिन कोई भी इस समस्या के लिय आवाज नही उठा रहा था. अनीता दीदी के द्वारा जब पहली

बार ग्राम संगठन की बैठक में मुद्दे को उठाया गया तो संगठन के सभी सदस्यों ने हाँ तो बोल दिया, लेकिन जब ग्राम पंचायत की बैठक में इस मुद्दे को लेकर जाने की बात की गई तो कोई भी दीदी के साथ न आया. इससे अनीता दीदी को गहरी ठेस पहुंची, लेकिन दीदी ने हार नही मानी.

फिर अगले महीने ग्राम संगठन की बैठक हुई तो अनीता दीदी के द्वारा सचेत परियोजना के सदस्यों को सहयोग के रूप मे बुलाया गया. उस बैठक में ये मुद्दा फिर से सामने आया तो परियोजना के सदस्यों के द्वारा बताया गया की एक अकेला इंसान कुछ नहीं कर सकता. ये मुद्दा दीदी का नहीं है, बल्कि पुरे गाँव का मुद्दा है. जब सभी दीदियों के बीच इस विषय पर चर्चा हुई, तब यह बात सब को समझ में आई.

बदलाव ये हुआ कि अनीता दीदी के साथ देने के लिय सभी दीदियां संगठित हो गई, साथ ही निर्णय लिया की आने वाली ग्राम सभा में इस मुद्दे को रखा जायेगा और प्रस्ताव बनवाया जायेगा. सभी दीदियां ग्राम सभा में एक आवेदन के साथ पहुंची और ग्राम सभा में अनीता दीदी ने पानी की समस्या के मुद्दे को उठाया और सभी दीदियों ने अनीता दीदी का साथ दिया. ग्राम सभा द्वारा महिलाओं की एकता को देखते हुए प्रस्ताव ठहराव पारित किया गया. साथ ही दीदियों के माध्यम से एक आवेदन जनपद स्तर पर भी लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग में दिया गया.

परिणाम स्वरूप दीदियों की मेहनत रंग लायी ओर लोक स्वास्थ यांत्रिकी विभाग से दो ट्यूबवेल बोर स्वीकृत हुए. और कुछ ही दिनों में ग्राम में बोरवेल खनन कार्य हुआ. दीदियों ओर समुदाय की मेहनत से बोरवेल सफल रहा ओर उसमे पर्याप्त पानी निकला. पानी की उपलब्धता देख कर ग्राम पंचायत के माध्यम से 200 मीटर की पानी की पाइप लाइन का निर्माण कार्य भी किया गया. आज समुदाय के लोगों को पानी पीने को मिलने लगा है जो की अनीता दीदी ओर ग्राम संघठन की दीदियों की मेहनत, जागरूकता ओर संघर्ष से सफल हो पाया है.

इस प्रकार अनीता दीदी के साथ ग्राम की सभी दीदियों की मेहनत रंग लाई और ग्राम में पानी की समस्या का समाधान हुआ. अनीता दीदी द्वारा न केवल पानी अपितु अपनी पंचायत में बहुआयामी परिवर्तन को लेकर कार्य कर बदलाव की कहानिया लिखी जा रही है. दीदी का कहना है, परियोजना से जुड़कर, स्वयं सचेत हो कर ग्रामीणों को भी सचेत ओर जागरूक करने का कार्य कर रही हूँ.

स्वास्थ्य और पोषण हेतु व्यापक जन-जागरूकता के लिए एक प्रभावी हस्तक्षेप

अंजली सिसोदिया

ग्राम- जलखेडा
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

महिलायें न केवल घर के लोगों के स्वास्थ्य के प्रति सजग रहती है बल्कि अपने समुदाय, अपने गाँव के लोगों का स्वास्थ भी बेहतर करने में सदैव प्रयासरत रहती है. आप ने ऐसे कई केस देखे होंगे जहाँ महिलाओं के प्रयासों से ग्रामीणों की स्वास्थ स्थिति में बेहतर बदलाव देखने को मिला है और बदलाव की कहानियां अखबारों में छपी है. हम आपको एक ऐसी ही कहानी बताएँगे जिसमे दीदी के प्रयासों से गाँव में स्वास्थ्य को लेकर लोगो को जागरूक किया गया.

ये कहानी है अंजली दीदी की जो बडवानी जिले, राजपुर ब्लॉक के पलसूद क्षेत्र की एक छोटी सी पंचायत जलखेडा की रहने वाली हैं. बडवानी जिला एक आदिवासी बाहुल्य जिला है. पलसूद क्षेत्र में अशिक्षा , बेरोजगारी, अजागरुकता देखने को मिलती है. यहाँ आज भी लोग बीमार होते है तो अस्पताल की बजाय तंत्र मंत्र करवाते दिखाई देते हैं. माताएं अपने बच्चों का टीकाकरण नहीं करवाती. स्वास्थ के प्रति लोग बहुत लापरवाही बरतते दिखाई देते हैं.

दीदी हमेशा से ही समुदाय के लोगों को समझाने का कार्य करती थी, लेकिन बेहतर मार्गदर्शन की कमी के कारण उनकी बातें लोगों तक नहीं पहुंच पा रही थीं. सचेत परियोजना ने उन्हें मजबूती से लोगों से जुड़ने और स्वास्थ्य के

प्रति चिंतित होने की सोच विकसित करने में मदद की, जिसके परिणामस्वरूप दीदी को विजनिंग प्रक्रिया के बाद स्वास्थ्य की सचेत दीदी बना दिया गया.

परियोजना के माध्यम से दीदी को स्वास्थ्य की बेहतर समझ विकसित करने के लिए अलग अलग माड्यूल पर प्रशिक्षण मिला और समुदाय को स्वास्थ के प्रति जागरूक करने के नए नए तरीके सिखाये गए. दीदी ने प्रशिक्षण उपरांत गाँव स्तर पर कार्य प्रारंभ किया. दीदी ने घर–घर जाकर समुदाय के लोगों को स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूक किया. उन्होंने नियमित रूप से आंगनवाड़ी केंद्रों में जाकर महिलाओं को और बच्चों को टीकाकरण करवाने के लिए प्रेरित किया. समय–समय पर वे स्वास्थ्य से जुड़ी रैलियां गाँव में आयोजित करतीं ताकि लोगों में जागरूकता बढ़े. इसके साथ ही, दीदी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, नर्स दीदी, और समिति के सदस्यों को सहायता भी करती हैं.

कोरोना काल में वैक्सीनेशन महाअभियान में दीदी का बहुत बड़ा योगदान रहा. इतना ही नहीं, दीदी के द्वारा ग्राम स्तर पर मिल रही स्वास्थ्य सेवाओं को महिलाओं, किशोरियों और बच्चों तक पहुँचाने का प्रयास किया.

दीदी ग्राम संगठन की बैठक में टीकाकरण, तिरंगा थाली, सामाजिक मुद्दे जैसे की घरेलू हिंसा, बाल विवाह आदि की चर्चा करती हैं. गर्भवती महिलाओं को आँगनवाड़ी में जाने के लिए प्रेरित करती हैं. स्वास्थ से जुड़े मुद्दों को दीदी के द्वारा ग्राम सभा में भी उठाया जाता है. समुदाय की सोंच में बदलाव एक दिन में नहीं आता किन्तु निरन्तर प्रयास से बदलाव जरुर आता है. दीदी के इस प्रकार के प्रयासों से अब लोगो में जागरूकता दिखाई देने लगी है. लोग अब बीमार होते हैं तो तंत्र मंत्र

करवाने की बजाय अस्पताल में अपना ईलाज करवाते हैं, माताएं अपने बच्चों को स्वयं आंगनवाड़ी टीकाकरण करवाने लाती हैं. किसोरी बालिकाएं भी किसोरी मंगलदिवस के महत्व को समझकर आंगनवाड़ी तक पहुँचने लगी हैं. ये सब संभव हो पाया है हमारी अंजली दीदी के प्रयासों से जो सचेत परियोजना के मार्गदर्शन में प्रशिक्षित होकर अपने गाँव में बेहतर स्वास्थ्य के बदलाव की दिशा में कार्य किया.

गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा के जमीनीकरण हेतु अनवरत प्रयास

सरिता दीदी

ग्राम पंचायत- भागसुर
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

समाज में अगर महिला शिक्षित हो तो कही न कही अपने परिवार, समुदाय के साथ अपने गांव और पंचायत को भी शिक्षित कर सकती है. ऐसी ही कहानी एक सरिता दीदी की है जो अनंत कठिनाईयों के बावजूद अपने हौसले को कभी भी कमजोर नहीं होने दिया और मजबूती के साथ उसका मुकाबला किया. दीदी गाँव और समाज कि प्रताड़ना और सामाजिक मान्यताओं से ऊपर उठकर अपने गाँव–समाज और पंचायत को भी शिक्षित कर अशिक्षा रूपी कलंक को मिटाने हेतु सदैव अग्रसर रही. वह अपने लक्ष्य तक पहुँचने में कामयाब होने के साथ ही औरों के लिए भी एक यादगार मिशाल साबित हुई है.

सरिता दीदी बडवानी जिले के अंतर्गत राजपुर ब्लॉक के भागसुर गांव की रहने वाली है जो की जिले से लगभग 40 किमी की दुरी पर है. सरिता दीदी ने 12वीं तक की पढ़ाई की है. दीदी स्वंय पढी–लिखी होने के साथ ही अपने गांव परिवार के बच्चों को भी शिक्षा से जोड़े रखने के लिये हमेशा प्रयासरत रहती है.

दीदी एक छोटे से गांव में रहने के कारण अपनी दैनिक दिनचर्या में घरेलु कार्यों के साथ खेती–बाड़ी के कार्य को प्राथमिकता से करती हैं. लेकिन खेती भी लाभ का धंधा ना होने से कहीं न कहीं कर्ज के बोझ तले दबे रहती एवं सेठ साहुकारों के चंगुलो में फसे रहती. इन्हीं सभी दिक्कतों को देखते हुये दीदी स्वंय सहायता समुह से जुडी एवं साहुकारों से कर्ज लेने की बजाय अब अपने समुह से ही पैसे का लेन देन करने लगी जिससे उन्हें अब

कर्ज के बोझ तले नहीं रहना पड़ता. इतना ही नहीं दीदी के मन में तो कुछ अलग ही सपने थे, वो चाहती थी की वो स्वंय पढी–लिखी है लेकिन अपने गांव के बच्चों को भी शिक्षित होते देखना चाहती हैं.

इसी बीच वर्ष 2017 में सचेत परियोजना के साथ जुड कर शिक्षा की सचेत दीदी के रूप में काम करने का फैसला किया. सचेत परियोजना के माध्यम से समय–समय पर दिये गये शिक्षा से जुड़े प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने गांव में शिक्षा में बदलाव को लेकर कार्य करना शुरू किया ताकि बच्चों को गुणवत्तापुर्ण शिक्षा, स्वास्थवर्धक मध्यान्ह भोजन एवं स्वच्छ पानी जैसी सुविधाएं मिलने लगे.

दीदी के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत अपने ग्राम की अन्य दिदियों को भी शिक्षा के महत्व, ग्राम सभा की ताकत एवं शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों के कार्यो एवं जिम्मेदारियों को लेकर समझाती. साथ ही, मोहल्लावार बैठक आयोजित कर शिक्षा के महत्व को समझाने का कार्य भी करती. आज सरीता दीदी की कर्मठता और निष्ठा की वजह से गाँव के हर परिवार में शिक्षा के प्रति जागरूकता आ गयी है. स्कूलों में बच्चों की उपस्थिति में वृद्धि हुई है और घर परिवार में शिक्षा के प्रति अनुकूल वातावरण बन गया है.

इतना ही नहीं, दीदी गांव में जागरूकता लाने के लिए शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ मिलकर अनियमित रूप से स्कूल जाने वाले बच्चों व उनके पालकों से संपर्क करती हैं जिससे स्कूल में बच्चों की उपस्थिति बढ़ सके.

शुरुआती दौर में दीदी को ढेरों कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था. स्कूल के शिक्षक दीदी की अहमियत को स्वीकार करने को राजी नहीं थे. लेकिन दीदी ने अपने प्रयासों में कभी भी कोई कमी नहीं की. दीदी ने नियमित रूप से स्कूल जाना, शिक्षकों से मिलना, सिर्फ अपने फलिए के स्कूल में ही नहीं बल्कि अन्य फलियों के स्कूल में भी जाना कभी नहीं छोड़ा. इतना ही नहीं, दीदी स्कूल में बच्चों के मिड डे मील और उनकी उपस्थिति को भी हमेशा ध्यान में रखा. दीदी अनियमित बच्चों की अनुपस्थिति को लेकर उनके माता पिता से संपर्क करती रही जिससे बच्चों की उपस्थिति में सुधार हो सके.

और तो और, दीदी ने लॉकडाउन के दौर में अपने फलिए के बच्चों को खुद ही पढ़ाना शुरू कर दिया. दीदी के द्वारा अपने घर पर ही कम्युनिटी लर्निंग सेंटर खोला गया है जिसमें 30 बच्चे नियमित रूप से पढ़ाई करते हैं. दीदी के द्वारा गांव के बच्चों को नियमित रूप से पढाने का कार्य किया जा रहा है. दीदी के प्रयास से बच्चों के सीखने के स्तर में भी काफी सुधार हो रहा है. सरिता दीदी के द्वारा किये जा रहे प्रयासों से आज न केवल शाला प्रबंधन समिति सशक्त हुई अपितु बच्चें नियमित रूप से स्कुल भी जाने लगे हैं. दीदी का स्वंय का कहना है कि सचेत परियोजना के साथ जुड़ कर उन्होंने अपने गांव में शिक्षा के प्रति अलख सी जगा दी है.

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्राप्ति की दिशा में एक जुझारू प्रयास

चम्पा जमरे

ग्राम पंचायत- एकलबारा
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

आदिवासी बहुल बडवानी जिला का पलसुद क्षेत्र पहाड़ी और पथरीली जगहों से भरा हुआ है. यहाँ एक छोटी सी पंचायत है 'एकलबारा' जो कि जिले से महज 40–45 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है. यहाँ बच्चों की पढाई की उम्र में कंधों पर स्कूल बैग होने की बजाय काम–धंधें का वजन दिखाई देने को मिलता है.

बच्चे स्कूल जाने की बजाय रोजगार की तलाश में सुबह से ही शहर की ओर दौड़ लगाते मिलते हैं. इसके कारण बच्चों का भविष्य अधर में समाते दिखाई देता है. इन्हीं सब की चिंता ग्राम की ही रहने वाली चंपा दीदी को दिखाई दी.

अगर ये बच्चे शिक्षा से वंचित रह गये तो हमारा गांव कभी विकास की ओर अग्रसर नहीं होगा.

चंपा दीदी ने ठान लिया था कि हमारे गांव के सभी बच्चे पढे लिखे और आगे बढे. इसी बीच दीदी सचेत परियोजना के साथ शिक्षा की सचेत दीदी के रूप में जुडी. आज दीदी अपना परिचय शशिक्षा की सचेत दीदी के रूप में देती है. दीदी ने अपने कार्य की शुरुआत वर्ष 2017 में की और तब से लेकर आज तक वह कई प्रशिक्षण मॉड्यूल का हिस्सा रही हैं.

दीदी ने परियोजना से प्राप्त प्रशिक्षण के बाद ग्राम सभा में शाला प्रबंधन समिति को सशक्त करने पर बल देने हेतु मुद्दा रखा लेकिन एक महिला के द्वारा ग्राम

सभा में बोलना एवं मुददा रखना पुरूषों को अपमान जनक लगा. दीदीयों को कई बार धमकियों का सामना भी करना पडा लेकिन चंपा दीदी ने हार नहीं मानी. चंपा दीदी को तो अपने गांव में शिक्षा की व्यवस्था में सुधार करना था ताकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बच्चों को मिले. इसी बीच सचेत परियोजना द्वारा एक बार उन्हें बैतुल जिले के शाहपुर प्रखंड के एक शिक्षा प्रोत्साहन केंद्र में जाने का अवसर मिला. वहाँ के शिक्षण केंद्रों में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को देखने के बाद, वह लौटी और अपने गाँव में भी एक शिक्षण केंद्र स्थापित करने की माँग की. उसके पश्चात सचेत परियोजना के सदस्यों ने व्यवस्था की और अपने ग्राम एकलबारा में एक सामुदायिक शिक्षा केंद्र की स्थापना की। दीदी ने स्वयं केंद्र चलाने की जिम्मेदारी ली. कुछ महीनों के बाद, सामुदायिक शिक्षा केंद्र को निकटतम प्राथमिक विद्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया ताकि इसकी सामग्री अधिक से अधिक बच्चों को उपलब्ध कराई जा सके. चंपा दीदी के नेतृत्व में उनके गांव की महिलाएं बच्चों के लिए सीखने का माहौल सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से अपने गांव के स्कूलों का दौरा करती हैं. पटेल फलियाध्टोला के प्राथमिक विद्यालय के दौरे के दौरान, उन्होंने देखा कि बच्चों को दिया जा रहा मिड डे मिल यानि भोजन न तो मेनु के अनुसार था और न ही मानक के अनुसार. इसलिए, दीदी ने इस अनियमितता पर चिंता जताते हुए सम्बंधित व्यवस्था के लोगों पर सवाल उठाए.

चूंकि 'मिड डे मिल' की जिम्मेदारी स्वयं सहायता समूहों को दी गई है, इसलिए भोजन तैयार करने वाली महिला के पति ने व्यवस्था पर उठाए गए सवाल को गलत समझ लिया. उन्हे लगा मानो सवाल उनके परिवार पर उठाया गया हो. फलस्वरूप शराब के नशे में उस व्यक्ति ने चंपा दीदी को धमकाने की कोशिश की. हालाँकि धमकियों के बावजूद दीदी पीछे नहीं हटी ओर मिड डे मील के मुद्दे को ग्राम सभा में रखा. ग्राम सभा के द्वारा समूह संचालक को बेहतर एवं मेनु अनुसार भोजन बनाने हेतु चेतावनी दी गई. अब बच्चों को मिड डे मील के मेनु के अनुसार, अच्छा एवं स्वास्थवर्धक भोजन मिलने लगा है.

चंपा दीदी शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ भी सक्रिय रूप से शिक्षा संबंधी मुद्दों को उठाती रही हैं. खुद को केवल गांव स्तर तक सीमित नहीं रखते हुए, वह सक्रिय रूप से जन शिक्षा केंद्र और ब्लॉक स्तर पर बनाए गए संवाद के मंच पर सक्रिय रूप से भागीदारी करती हैं ताकि जमीनी स्तर पर सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए समुदाय एवं विभाग के बीच संवाद सुनिश्चित किया जा सके. सचेत परियोजना से जुड़ कर न केवल दीदी ने अपने स्वंय में बदलाव महसूस किया बल्कि अपने गांव में भी शिक्षा के प्रति लोगों एवं बच्चों में अलख जगा दी है.

समुदाय की दीदी के प्रयासों से हो रहा शतप्रतिशत टीकाकरण, अधोसंरचना निर्माण से हो रहा गाँव का विकास

टेम्पो

ग्राम- टेमला
ग्राम पंचायत- टेमला
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बच्चों एवं गर्भवती माताओं में टीकाकरण करवाने को लेकर कई भ्रांतियाँ प्रचलित हैं. किन्तु जैसे–जैसे समुदाय में महिलाओं के द्वारा सक्रिय रूप से जन–जागरूकता को लेकर कार्य किया जा रहा है, वैसे–वैसे बदलाव की कई कहानियाँ भी देखने को मिलने लगी है. एक बदलाव की कहानी है बडवानी जिले के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र के राजपुर ब्लॉक के ग्राम पंचायत टेमला कीय जहाँ एक स्वास्थ्य की सचेत दीदी ने निरंतर प्रयास कर संपूर्ण टीकाकरण हेतु समुदाय को व्यापक रूप से संवेदनशील बनाया. ग्राम पंचायत टेमला, राजपुर तहसील से तकरीबन 25 कि.मी. दूर स्थित है.

ग्राम पंचायत की कुल जनसंख्या 2100 है, जो कि 8 फलियों में बसा हुआ है. इस गांव में अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़े वर्ग के लोग निवास करते हैं. लोगों की आजीविका का मुख्य साधन खेती और मजदूरी है. आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण जागरूकता का अभाव भली–भांती रूप से देखने को मिलता है. शासन द्वारा टीकाकरण जैसे अभियान को व्यापक स्तर पर चलाया जाता है, किन्तु शिक्षा के अभाव के कारण ग्रामीण समुदाय द्वारा अपने बच्चों का टीकाकरण नहीं करवाया जाता. समुदाय में अभी भी यह भ्रम है कि बच्चों का टीकाकरण करवाने से वे या तो बीमार हो जाते हैं या मर जाते हैं, जिससे कि शतप्रतिशत टीकाकरण का हो पाना एक गंभीर विषय बन जाता है.

इन तमाम तरह की चुनौतियां दीदी के सामने भी आयीं, किन्तु दीदी ने

स्वास्थ्य की सचेत दीदी के रूप में सचेत परियोजना के साथ जुड़ कर कार्य किया. समय–समय पर मिले प्रशिक्षण में उन्हें यह जानने को मिला कि टीकाकरण करवाने के बाद हल्का बुखार बच्चो को आता ही है. ये बात दीदी के द्वारा समूह संगठन की दीदियों के बीच बताई गई, साथ ही ग्राम सभा में भी टीकाकरण के विषय में जानकारी देकर लोगों को जागरूक किया गया.

टेम्पो दीदी ने सचेत परियोजना द्वारा अहमदाबाद में आयोजित स्वास्थ्य और पोषण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया. जब दीदी समुदाय के बीच जाती तो उनका कहना था कि बच्चों को टीकाकरण करने से उन्हें तेज बुखार आ जाता है, वह बीमार पड़ जाते हैं. गर्भवती महिलाओं से चर्चा की तो उनका भी कहना था कि टीका लगवाने से बच्चा गिर सकता है. इस पर सचेत दीदी ने आशा और नर्स दीदी का सहयोग लेकर टीकाकरण के लिए लोगों को समझाना और टीकाकरण के प्रति उन्हें जागरूक करना शुरू किया. उन्हें टीकाकरण सत्र में ले जा कर टीकों के फायदे के बारे में बताया. जिन्हें टीका लगा था उनसे संपर्क करके ग्राम की अन्य गर्भवती महिलाओं को प्रेरित किया.

आज टेम्पो दीदी अपने गाँव में स्वास्थ्य एवं पोषण के मुद्दों पर लोगों को जागरूक कर रही हैं. गर्भवती महिलाओं को शरीर में आयरन की कमी को दूर करने एवं पौष्टिक आहार की महत्वपूर्णता को लेकर तिरंगा थाली के बारे में समझाया. टेम्पो दीदी द्वारा ग्राम स्वास्थ्य एवं ग्राम तदर्थ समिति की बैठक को नियमित करने के लिए आशा और समिति के सदस्यों को प्रेरित किया जा रहा है. परिणाम स्वरूप अब बैठक नियमित रूप से होने लगी है. धीरे–धीरे समुदाय में टीकाकरण को लेकर एवं उनके सकारात्मक प्रभाव और टीकाकरण करवाने से कौन–कौन सी बीमारियों से लड़ने की क्षमता आती है आदि के बारे में दीदी द्वारा मोहल्ला बैठक, रैली आदि के माध्यम से समुदाय के बीच जागरूकता हेतु प्रयास किया जा रहा है. आज ग्राम में कोई भी बच्चा टीकाकरण से वंचित नहीं है. ये सब दीदी के प्रयासों और सचेत परियोजना में मिले प्रशिक्षण से संभव हो पाया है.

दीदी के द्वारा न केवल टीकाकरण बल्कि अधोसंरचना निर्माण को लेकर भी कार्य किया जा रहा है. पटेलपूरा आंगनवाडी की छत की मरम्मत के लिए ग्राम सभा में मांग रखी गई. दीदी और समूह की सक्रिय महिलाओं के द्वारा ग्राम विकास योजना में इन मुद्दों और गतिविधियों को शामिल किया गया और 26 जनवरी 2022 की ग्राम सभा में समिति ने प्रस्तावित किया. दीदी के लगातार प्रयास से पटेलपूरा की आंगनवाडी केंद्र की छत की मरम्मत का प्रस्ताव पारित हुआ और कार्य संपन्न हुआ.

दीदी हमेशा प्रयास करती हैं कि गाँव में सभी को स्वास्थ्य सम्बंधित सेवाओं और विभिन्न योजनाओ का लाभ प्राप्त हो सके. अब अभी महिलायें और बच्चे टीकाकरण दिवस पर आंगनवाडी केंद्र जाते हैं. इतना ही नहीं, जब दीदी के द्वारा गाँव में तीन धात्री महिलाएं लीला दीदी, ध्रुवी बाई और रलिया दीदी मे आयरन की कमी का पता चला, तब दीदी ने ए.एन.एम, आशा दीदी और आँगनवाडी कार्यकर्ता के सहयोग से उन तीनों महिलाओं को नियमित तिरंगा भोजन का सेवन और आयरन की गोलियों के सेवन के लिए परामर्श किया. अब ये तीनों दीदीयां स्वस्थ है, जो कि दीदी के परामर्श ओर प्रयासों के कारण ही संभव हो पाया है. सचेत परियोजना से जुड़कर टेम्पो दीदी के द्वारा अपनी पंचायत में बहुआयामी परिवर्तन को लेकर कार्य किया जा रहा है. फिर चाहे वो महिला और बाल स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दे हों या अधोसंरचना से जुड़े हों.

बेहतर शिक्षा के प्रति जागरूक हुआ पंचायत

गंगा अलावे

ग्राम- उपला
ग्राम पंचायत- उपला
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

यह कहानी है शिक्षा की सचेत दीदी गंगा अलावे की, जो बडवानी जिले के राजपुर ब्लाक की एक छोटी सी पंचायत उपला की रहने वाली है. गंगा दीदी ने पिछले 5 वर्षों के सतत प्रयासों से अपने मजरेध्टोले ही नहीं, बल्कि पूरी पंचायत में बेहतर शिक्षा का माहौल बनाने का भरसक प्रयास किया है.

गंगा दीदी ने सचेत परियोजना के साथ जुड़ कर समय–समय पर शिक्षा से जुड़े प्रशिक्षण, मीटिंग और एक्सपोजर में भागीदारी निभाई ओर अपने सीखने की समझ विकसित की. आज दीदी ग्राम संगठन की बेठक में नियमित रूप से भागीदारी निभाती हैं ओर ग्राम की अन्य महिलाओं को भी जोड़ कर समूह सशक्तिकरण को लेकर कार्य कर रही हैं.

साथ ही समूह संघठन की बैठक मे स्कूल से जुड़ी समस्याओ के ऊपर चर्चा ओर निर्णय, निर्माण एवं निगरानी करवाने में भूमिका निभाती नजर आती हैं.

दीदी ने अपने गाँव में शिक्षा की स्थिति को बेहतर बनाने और ग्रामीणों में शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए शाला प्रबंधन समिति से नियमित संपर्क किया है. उन्होंने बैठकें आयोजित की हैं और अपने स्कूल में गुणवत्तायुक्त शिक्षा को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है, इस पर चर्चा करके बदलाव की पहल की है. दीदी अपने प्रयासों से समुदाय के बीच वार्ड सभा, मोहल्ला बैठक आदि का आयोजन कर शिक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करने का कार्य कर रही हैं, जो की काफी सराहनीय प्रयास है.

दीदी के इन प्रयासों का परिणाम भी हमें देखने को मिला रहा है. वर्तमान में सभी स्कूलों में शतप्रतिशत बच्चों की उपस्थिति है एवं बच्चे नियमित स्कूल जाने लगे है. दीदी ने शिक्षा अधिकार अधिनियम के प्रावधानों को सशक्त बनाने का प्रयास किया है, और इसका परिणाम है कि अब हर महीने शाला प्रबंधन समिति की बैठक होती है. समस्याओं पर चर्चा करते हुए उन्होंने ग्राम पंचायत में समाधान के लिए प्रस्ताव पेश किया है, और इसे ग्राम सभा में चर्चा के बाद पारित भी किया जाता है.

शिक्षा की बेहतर व्यवस्था स्थापित हेतु गंगा दीदी द्वारा हर माह अपने गाँव के सभी मजरों की स्कूल में समूह की दीदियों के साथ समय–समय पर विजिट कर निगरानी करती है. शिक्षक स्कूल मे नियमित आ रहे हैं या नहीं, बच्चों को समय अनुसार पढ़ाते है या नहीं, उस पर भी नियमित निगरानी रखती हैं. इसके अलावा, दीदी ने समय–समय पर शिक्षा जागरूकता रैली का आयोजन किया है ताकि बच्चों को स्कूल पहुंचने के लिए उनके माता–पिता को प्रेरित किया जा सके. वह स्कूल में बच्चों को पोष्टिक आहार की उपलब्धता के लिए मध्याह्न भोजन (मिड डे मील) की निगरानी भी करती हैं. उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया है कि भोजन मेनू के अनुसार सही रहे और इसके लिए वह भोजन बनाने वाले समूह के सदस्यों से चर्चा करती हैं.

दीदी स्कूल विजिट के दौरान बच्चों की अनियमितता की समस्याओं को लेकर शिक्षकों से लगातार संवाद करती रहती हैं. इसके लिए, दीदी ने एक उपाय निकाला कि हर महीने की निश्चित तारीख पर शाला प्रबंधन समिति की बैठक को लेकर सभी सदस्यों को सूचित किया जाए। इसमें बताया जाता है कि जो बच्चे स्कूल नहीं जाते और कहीं और मजदूरी करते हैं, खेती–बाड़ी करते हैं, या बाहर खेलते हैं, उनके माता–पिता से स्कूल नहीं भेजे जाने का कारण पूछा जाए। साथ ही, उन्हें समझाया जाए कि शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है और एक बेहतर शिक्षा से हम अपने बच्चों का भविष्य कैसे उज्ज्वल कर सकते हैं.

धीरे धीरे परिणाम काफी सकारात्मक आने लगा. बच्चे खेती बाड़ी, घरेलू कार्य, साथ ही बाहर खेल–कूद की बजाय समय से स्कूल जाने लगे. इस प्रकार गंगा दीदी नेअपने गाँव में शिक्षा के प्रति अलख जगाने के लिए निष्ठा, लगन और कर्मठता से गाँव में बेहत्तर शिक्षा का माहौल बनाया. अब हर अभिभावक अपने बच्चों को नियमित रूप से स्कूल भेजते है.

गंगा दीदी ने कोविड महामारी के दौरान भी ग्राम संगठन की सहमति से कम्युनिटी लर्निंग सेंटर प्रारम्भ किया जिसको संचालित करने के लिए एक युवा का चयन किया गया जिसका उद्देश्य था कि महामारी की वजह से बच्चों की शिक्षा प्रभावित न हो.

दीदी ने सचेत परियोजना से जुड़ कर अपने गाँव मे किए गए शिक्षा के प्रति बदलाव की एक अनोखी मिसाल पेस की है.

संस्थागत प्रसव को लेकर समुदाय को जागरूक कर रही स्वास्थ की बदलाव दीदी

धगडी दीदी

ग्राम- रेवजा
ग्राम पंचायत- रेवजा
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

प्रशासन द्वारा संस्थागत प्रसव करवाने के लिए कई प्रयास किए जाते हैं, साथ ही समुदाय के बीच जागरूकता कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं. कोशिश यह है कि हाशिए पर खड़ा समुदाय भी संस्थागत प्रसव करवाने के लिए जागरूक हो सके. हालांकि, ऐसे कई आदिवासी बाहुल्य जिले हैं जहां प्रशासन के प्रयासों के बावजूद भी स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार नहीं हो पा रहा है. इन चुनौतियों का सामना करने के लिए कई सामाजिक स्वयंसेवी संगठनों ने प्रशासन के साथ मिलकर काम किया है.

एक ऐसे ही आदिवासी बाहुल्य जिले, बड़वानी, राजपुर ब्लॉक के पलसूद क्षेत्र की बात कर रहे हैं, जहां सचेत परियोजना के सहयोग से दीदियों ने कई सराहनीय कार्य किए हैं और बदलाव लाने में सफल हुई हैं.

ये कहानी है ग्राम पंचायत रेवजा की रहने वाली धगडी दीदी की, जिनके प्रयास से आज संस्थागत प्रसव को बल मिला है. अब कोई भी परिवार अपनी बहु–बेटी का प्रसव घर पर नहीं करवाता है, बल्कि शासन द्वारा घर पहुंच सेवा गाड़ी जननी 108 पर कॉल करके शासकीय अस्पताल की और जाते हैं. ये बदलाव यूँ ही नहीं हुवा, बदलाव लाने के पीछे धगडी दीदी कि भूमिका काफी एहम है.

दीदी ने सचेत परियोजना से जुड़ने के बाद स्वास्थ से जुड़े विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया और प्रशिक्षण उपरांत ग्राम संघठन, समूह एवं समुदाय के बिच स्वास्थ से जुड़े मुद्दों को रखने लगीं. दीदी ने देखा की जब तक स्थाई समिति अर्थात ग्राम स्वास्थ एवं ग्राम तदर्थ समिति सशक्त नहीं होती, तब तक बेहतर स्वास्थ स्थिति की कल्पना करना संभव नही है. इसे देखते हुए, दीदी ने समिति के सदस्यों के साथ चर्चा की और धीरे–धीरे प्रयास के साथ स्थाई समिति बैठकें नियमित करवाईं. साथ ही, ग्राम सभा में ज्यादा से ज्यादा महिलाएं बुलाने के लिए मोहल्ला बैठकें आयोजित की गईं, और धरातल स्तर पर प्रचार–प्रसार किया गया. इसका परिणाम यह हुआ कि कभी ग्राम सभा में नहीं आने वाली महिलाएं बढ़–चढ़कर आने लगीं, और ग्राम सभा जागरूकता का एक अच्छा मंच बन गया. दीदी ने हर बार ग्राम सभा में संस्थागत प्रसव के फायदे, व शासन द्वारा मिल रही सुविधाओं के बारे में बताया. परिणाम स्वरुप धीर–धीरे समुदाय में, खास तोर पर महिलाओं में संस्थागत प्रसव को लेकर जागरूकता बढ़ी.

एक बार दीदी ने गाँव की रिन्गुबाई के घर जाकर जिसका प्रसव होने वाला था, उसके ?संस्थागत प्रसव के लिए 108 जननी पर कॉल किया. गाड़ी रिन्गुबाई के घर बुलाई गई और प्रसव शासकीय अस्पताल में हुआ, जो कि दीदी के बिना संभव नहीं हो पता. दीदी का कहना है कि जब तक गाँव में एक भी घरेलू प्रसव होगा तब तक उनका गाँव बेहतर स्वास्थ की दिशा में अग्रेसित नहीं हो सकता है.

दीदी का मानना है कि मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के मुद्दों पर सबको जागृत करना अत्यंत आवश्यक है.

इसलिए उन्होंने सचेत परियोजना के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में भाग लिया और आज सामुदायिक प्रशिक्षक के रूप में कार्य कर के दूसरे दीदीयों को भी प्रेरणा दे रही हैं.

दीदी अपने गाँव की गर्भवती महिलाओं के लिए संस्थागत प्रसव प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता लाने का प्रयास कर रही हैं जिसका परिणाम बहुत सकारात्मक दिखाई दे रहा है.

बेहतर स्वास्थ सुविधाओं और जागरूकता को लेकर समुदाय की दीदी कर रही प्रयास

आसमा ताराचंद

ग्राम- सालीकला
ग्राम पंचायत- सालीकला
जनपद-राजपुर, जिला-बड़वानी

ये बदलाव की कहानी है ग्राम पंचायत सालीकला की रहने वाली आसमा दीदी की, जो की बड़वानी जिले के राजपुर ब्लॉक की एक छोटी सी पंचायत है. आसमा दीदी स्वास्थ्य की सचेत दीदी के रूप में पिछले 4 साल से स्वास्थ्य के मुद्दों पर सालिकला में सक्रीय रूप से काम कर रही हैं.

आसमा दीदी ग्राम पंचायत सालीकला में वार्ड मेंबर (पंच) और ग्राम संगठन की सचिव भी हैं. दीदी अपनी पंचायत में बहुआयामी परिवर्तन को लेकर कार्य कर रही हैं. दीदी समय–समय पर सचेत परियोजना के साथ जुड़कर पंचायत में स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका, और कृषि के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण बदलाव लाने के लिए प्रशिक्षण में भाग लेती हैं.

दीदी स्वास्थ्य और पोषण से जुड़े विषयों पर भी जो सीखतीं हैं, वह आंगनवाड़ी केंद्र, ग्राम संगठन की बैठक और आस–पास की दीदीयों के साथ साझा करती हैं.

दीदी गाँव की अन्य दीदियों को प्रेरित कर अपने गाँव स्तर के सभी मुद्दों ओर प्रस्ताव को ग्राम पंचायत और ग्राम सभा में रखने में सहयोग करती हैं साथ ही आए हुए प्रस्ताव को पारित करवाने में भी मदद करती हैं.

आसमा दीदी ने ग्राम स्वास्थ्य और ग्राम तदर्थ समिति की बैठक को नियमित रूप से आयोजित करने के लिए कई प्रयास किए, क्योंकि पहले यह बैठक नियमित रूप से नहीं होती थी. आसमा दीदी ये जानती थी कि, जब तक ग्राम स्वास्थ्य एवं ग्राम तदर्थ समिति सशक्त नहीं होगी तब तक गाँव में स्वास्थ की स्थिति को बेहतर एवं गुणवत्तापूर्ण नहीं बनाया जा सकता है. दीदी के प्रयासों से धीरे–धीरे समिती की बैठक आयोजित होने लगी ओर बैठक आयोजन के कारण ग्राम की समस्याओं के ऊपर भी चर्चा ओर समाधान होने लगे.

आसमा दीदी के द्वारा चाहूमुखी विकास पर कार्य किया जा रहा है, जिसका एक उदाहरण हम देखते हैं. बंडीपुरा में, जो की सालीकला पंचायत का ही एक मजरा है, पानी की व्यवस्था तो थी, लेकिन घर–घर नल की व्यवस्था नहीं होने के कारण पीने के पानी को लेकर समस्याओं का सामना करना पड़ता था. हैंडपंप से पानी लेने के लिए दूर दूर तक जाना पड़ता था.

दीदी ने इस समस्या पर कार्य किया और आज समुदाय को पिने का पानी नल के माध्यम से उपलब्ध हो रहा है. आज आसमा दीदी सामुदायिक प्रशिक्षक के रूप में भी कार्य कर रही हैं और दूसरे गाँव जाकर दीदियों को जानकारी और काम करने के लिए प्रेरणा भी दे रही हैं. इस प्रकार आसमा दीदी अपने गाँव के चाहूमुखी विकास के लिए चौतरफा प्रयास कर रही हैं, जिसमें महिला कल्याण, स्वास्थ्य, सड़क और घर घर पानी शामिल है.

दीदी के द्वारा लगातार स्वास्थ जैसी सुविधाओं के बेहतरी के लिए प्रयास किये जा रहे हैं. दीदी नर्स, आशा, आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता आदि से संपर्क कर स्वास्थ जागरूकता रैली

और मोहल्ला बैठक के माध्यम से समुदाय को जागरूक कर रही हैं. सचेत परियोजना से जुड़ने के बाद दीदी ने अपने गाँव में न केवल स्वास्थ बल्कि, शिक्षा, एवं आजीविका जैसे मुद्दों पर भी प्राथमिकता से कार्य किया, जो की बदलाव की दिशा में एक बड़ा कदम है.